

Q. 1894-95 में घटित चीन-जापान के युद्ध का मूल्यांकन करें।

Ans:-

Prepared by

Dh. Md. Haider Ali, Assistant Professor
Dept of History, R.B.G.R College
Maharajganj, J.P.U., Chapra

विश्व के इतिहास में चीन तथा जापान के युद्ध का महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है इस युद्ध में जापान को एक शक्तिशाली देश के रूप में उभरने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जापान चीन को परास्त कर विश्व के महान शक्तियों में शामिल हो गया।

1868 में घटित मेइजी पुर्नस्थापना के बाद जापान ने स्वयं को आधुनिकरण कर लिया और साम्राज्य के होड़ में निकल पड़ा। सबसे पहले उसकी नज़रें कोरिया, मंचूरिया पर गयी। अतः कोरिया को लेकर ही 1894-95 में चीन-जापान युद्ध हुआ। कोरिया में राजतंत्र था जिसपर चीनी राजवंश मंचू का प्रभाव था। अतः कोरिया पर प्रभाव जमाने का अर्थ था चीन से लड़ाई मोल लेना फिर भी जापान के लिये कोरिया काफी महत्वपूर्ण था।

1. कोरिया की भौगोलिक बनावट :-

कोरिया में प्राकृतिक संसधान प्रचुर मात्रा में थे जैसे - कोयला तथा लोहा।

2. कोरिया जापान के व्यापार के लिये भी महत्वपूर्ण था।

अतः जापान ने कोरिया पर प्रभुत्व स्थापित करने के लिये कोरिया को चीन से मुक्ति दिलाने की कोशिश की और कोरिया को आधुनिकरण करना चाँहा ताकि जापान का व्यापार कोरिया के साथ फल-फूल सके। जापान की मदद से कोरिया में भी सुधार के लिये आन्दोलन प्रारम्भ हो गये। आन्दोलनकारी कोरिया के पुरातनपंथी के सरकार के खिलाफ उठ खड़े हुए तथा आधुनिकरण की माँग की। दूसरी तरफ चीन कोरिया की सरकार को मदद करता रहा। 1884 में कोरिया में जापान समर्थक आन्दोलनकारीयों ने कोरिया की सरकार को उखाड़ फेंकने की कोशिश की लेकिन चीन की सेना के कमान्डर जनरल Yuan Shih-Kai ने कोरिया के राजा को बचा लिया और आन्दोलनकारी को कुचल दिया। अतः चीन और जापान में ठूँस गई लेकिन अन्त में दोनों पक्षों ने Li-Yang समझौता किया जिसके तहत यह तय हुआ कि दोनों देश कोरिया से अपनी सेना को वापस बुला लेंगे।